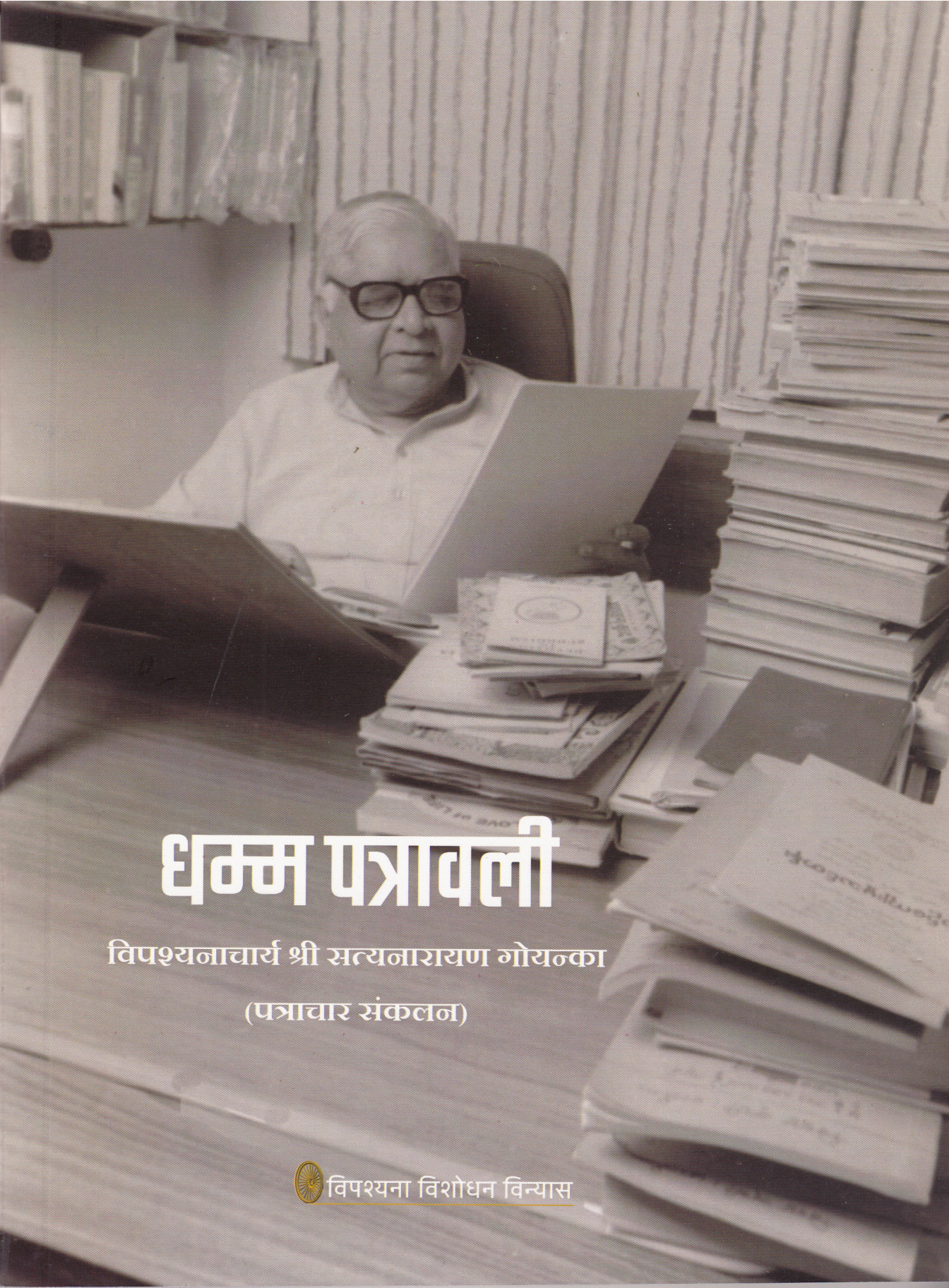

धम्म पत्रावली

विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायण गोयन्का

(पत्राचार संकलन)

विपश्यना विशोधन विन्यास

जग में बहती ही रहे, धरम-गंग की धार।
जन-जन का होवे भला, जन-जन का उपकार।।

धम्म पत्रावली

धम्म पत्रावली

विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायण गोयन्का

(पत्राचार संकलन)

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

धम्म पत्रावली
पुस्तक कोड: **H117**

© विपश्यना विशोधन विन्यास
सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण: दिसंबर 2025

मूल्य : रु.
Price: Rs.

ISBN: 978-81-990218-3-9	**Paperback/softback**
ISBN: 978-81-990334-6-7	Hardback
ISBN: 978-81-990218-7-7	E-book reader
ISBN: 978-81-990218-4-6	Digital download

प्रकाशकः
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला- नाशिक, महाराष्ट्र
फोन: ०२५५३-२४४९९८, २४३५५३, २४४०७६, २४४०८६,
८४८४८३४८३७, ८४८४८३७८३५,
८४८४८३९८३७, ८४८४८३१८३५
Email: vri_admin@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org

मुद्रकः
अपोलो प्रिंटिंग प्रेस
२५९, सीकॉफ लिमिटेड, ६९ एम. आय. डी. सी.
सातपुर, नाशिक-४२२००७, महाराष्ट्र

इमे द्वे पुग्गला दुल्लभा लोकस्मिं।
यो च पुब्बकारी,
यो च कतञ्ञू कतवेदी।।

संसार में ये दो प्राणी दुर्लभ हैं–
वह जो किसी का उपकार करने में पहल करता है,
वह जो कृतज्ञ एवं आभारी होता है।

धम्म पत्रावली

विषय-सूची

संपादकीय टिप्पणियां 9

अनिश्चितता के समय में धम्म का मार्गदर्शन 11

धर्म-रत्न भारत को वापस 24

सयाजी ऊ बा खिन और गोयन्काजी के बीच पत्राचार 25

सयाजी के पत्रों में से :- 25

भारत में बहुत महान और अपूर्व सेवा का काम कर रहे हो। 25

गोयन्काजी के पत्राचार 29

पहले शिविर का प्रतिवेदन सयाजी को 29

अस्वीकार और अंतिम समय में सहमति 34

उत्तर भारत में एक ऐतिहासिक धम्म शिविर 39

व्याख्या की स्पष्टता 40

अनागारिक धर्मपाल 42

विद्वानों के साथ 42

मुंबई, दिल्ली और वर्धा 44

चूरू, दिल्ली, लखनऊ की ऐतिहासिक धर्मचारिका 56

त्रिविध परिशुद्ध दान 69

सामाजिक अपेक्षाएं 74

अंधकार या प्रकाश 79

गाली दी, मारा मुझे, हाय लिया सब लूट 80

पुष्कर के समाचार 85

सहिष्णुता की कला 90

विविध समूह के लोग 91

मन को शुद्ध कैसे करें 97

मानो राजस्थान में हों 99

दुश्मनों को दोस्त में बदलना 104

मेरा भाग्योदय हुआ 107

बच्चों को धर्म सिखाने का काम 109

सयाजी के शरीर त्याग के बाद के पत्राचार 117

सयाजी ऊ बा खिन के अंतिम क्षण 120

पूज्य सयाजी के अंतिम दिनों का प्रतिसाद 127
विरासत की जिम्मेदारी 128
अनन्त ज्योति जगाये रखें 131
भविष्य के लिए मार्गदर्शन 132
विपश्यना प्रसारण ही सच्चा स्मृति स्तंभ 133
सयाजी के सम्मान में 134
वैश्विक धम्म की पुकार 136
चतुर्विपश्यना की प्रयोगशाला 141

माताजी के पत्र एवं सत्यनारायण गोयन्का जी के उद्बोधन 147
माताजी के कुछ पत्रांश 147
गोयन्का जी के कुछ पत्रांश 150
धर्म जागता रहे! 150
तुम्हारे द्वारा महिलाओं का कल्याण होगा 151
धर्म-चेतना जाग्रत रहे 152
धर्म सदैव रक्षा करेगा 153
तुम धर्मपुत्रियों का ध्यान रखोगी 154
हम एक-दूसरे को मजबूत बनाएंगे 155
धैर्य और साहस 157
ध्यान ही एकमात्र शरण बनता है 158
धर्म-बल 159
सबका कल्याण 160

श्री सत्यनारायण गोयन्का 163

विभिन्न मंचों पर सम्मान 170

श्री स. ना. गोयन्का द्वारा संचालित विपश्यना-शिविर 172

विपश्यना केंद्र 179

प्रकाशन 182

पालि शब्दावली 185
किताबें छापना 191

संपादकीय टिप्पणियां

श्री गोयन्का जी ने अपने पीछे धर्म का बहुत विशाल खजाना छोड़ा है। इनमें उनके अधिकांश भारत में उनके शिक्षण की शुरुआत के दौरान सयाजी ऊ बा खिन के साथ उनके निजी पत्राचार और उनके परिवार के साथ के पत्राचार के रूप में और भी मूल्यवान जानकारियां प्राप्त होती हैं। उनकी जीवन-यात्रा के कुछ अंश विपश्यना विशोधन विन्यास द्वारा प्रकाशित "विपश्यना" पत्रिका में भी छपते रहे हैं।

कुछ निजी पत्र इस प्रकाशन के लिए विशेष रूप से संपादित और संशोधित किए गए हैं। सामग्री की संरचना को धाराप्रवाह बनाए रखने के लिए संपादकों द्वारा कुछ शीर्षक भी जोड़े गए हैं। हमारी आकांक्षा यही है कि यह संकलन पाठकों के लिए अधिक लाभकारी और आनंद का स्रोत बने। यदि किसी प्रकार की असहमति या अवज्ञा हुई हो, तो जिम्मेदारी हम संपादकों पर है।

— संपादक मंडल

जलम मिल्यो जीं देस में, धरम मिल्यो जीं देस।
बाबा! कदे न भूलस्यूं, मंगल बिरमा देस॥

जिस देश में केवल माँ की कोख से ही जन्म नहीं मिला,
बल्कि शुद्ध धर्म रूपी विपश्यना पा कर मेरा इतना कल्याण हुआ,
उस मंगलमय म्यंमा देश को भला मैं कैसे भूल सकता हूं!